मई, १९८६ मूल्य : रु. ५ टाइम्स ऑफ इंडिया प्रकाशन

वामा

विचारशील महिलाओं की विशिष्ट पत्रिका

कामकाजी शहरी स्त्री : एक अर्धसत्य

खादी से खानदान तक
बातचीत जया बच्चन से

आइए, पैकेज टूर पर चलें

घर-सज्जा और आयोजन : विशेष परिशिष्ट

'कमरों की भी रूह होती है'

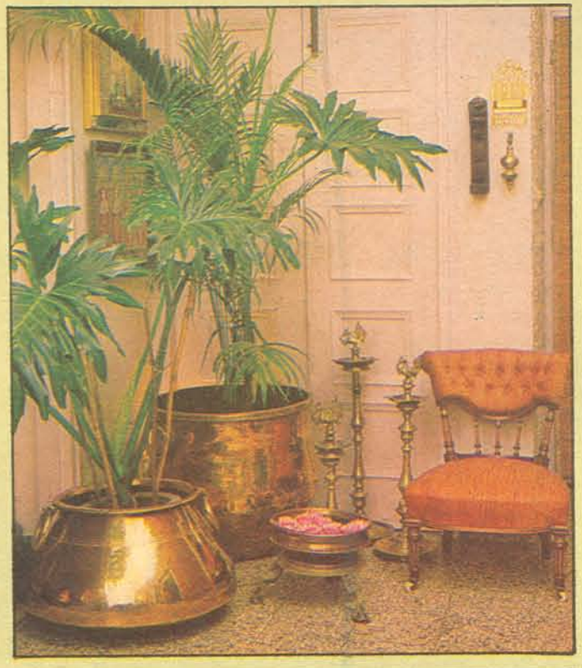

"एक घर को डिज़ाइन करने, और एक होटल को डिज़ाइन करने में बहुत फर्क है. पर दोनों की सज्जा में आखिरकार जिस बात का उभर कर सामने आना बहुत ज़रूरी है, वह है, एक खास जीवन शैली का अहसास. हम जिस समय में रह रहे हैं, उस में रहन सहन की कोई एक सर्वमान्य शैली नहीं है. हमारे आगे बहुत सी राहें खुली हैं. और हर तरह की सज्जा के लिए हर तरह के उपकरण भी उपलब्ध हैं. सज्जाकार की परख इस बात से होती है, कि उस ने उन्हें किस तरह प्रस्तुत किया है. सब कुछ देख, सोच और महसूस करके उन तमाम अहसासों को ठोस सौंदर्य के रूप में पेश करना ही मुख्य बात है..कई मर्तबे सब से सरल और सुलभ रास्ता ही सब से अच्छा होता है."

— **सुनीता कोहली** (इंटीरियर डिज़ायनर)

सभी रंगीन छाया: अमर बेदी

'कमरों की भी रूह होती है'

यह शब्द हैं सुश्री सुनीता कोहली के. बहुत कम लोग जानते हैं, कि सुनीता ने दिल्ली के कुछ बेहद खूबसूरत घरों और संस्थाओं की अंतर्सज्जा की है. पर स्वभाव से विनम्र सुनीता उनका नामोल्लेख कतई नहीं करना चाहतीं, और 'वामा' से उन का पहला आग्रह यही था, कि आलेख में जहां तक हो, उन की या उनके प्रसिद्ध क्लाएंट्स की बजाए, उन के काम को ही प्रमुखता दी जाए, जिस में उन के सहयोगी भी शामिल हैं. उन की राय में इंटीरियर डिजायनिंग का काम ऊपरी तौर से ही ग्लैमरपूर्ण लगता है. दरअसल यह कठोर मेहनत और काम के प्रति पूरे समर्पण की मांग करता है.

कहना न होगा, कि प्रतिभा की धनी सुनीता का खुद अपना घर उन की अपनी शैली की पूरी छाप लिए हुए है. इस में प्रयुक्त तमाम फर्नीचर ही नहीं, सज्जा का एक-एक उपकरण उन्होंने खुद छांटा और संजोया है. फर्नीचर की विशेषज्ञा के नाते उन की राय में फर्नीचर कभी भी अहम नहीं दीखना चाहिए. सज्जा के लिए खुद उन्होंने जो उपकरण चुने हैं, वे पूरी तरह भारतीय हैं. प्रस्तुत हैं उन के कुछ विचार.

घर की अंतर्सज्जा

''हमें लगता है कि सज्जा के लिहाज से सब से आकर्षक वे ही घर होते हैं, जहां घर का भीतरी हिस्सा अपना एक खास व्यक्तित्व रखता है. इसे आप किसी बंधे बंधाए फार्मूले की तहत डिजाइन नहीं कर सकते, यह एक सुघड़-पैने नजरिए की मदद से ही किया जा सकता है. कई बार बनावट की दृष्टि से खराब कमरों की बुनियादी कमजोरियां भी सही सज्जा से छिपाई जा सकती हैं, एक सुंदर कमरे की रूह साफ-सुथरे शांतिमय और बनावट की दृष्टि से सही स्पेस में ही छिपी होती है.

''मुझे लगता है कि एक कमरा और उस में लगाए गए तमाम उपकरण मृत चीजें नहीं हैं. वे भी अपनी रूह रखते हैं, और इसीलिए उन में बीच-बीच में बदलाव करना जरूरी हो जाता है. हमें यह कभी नहीं कहना चाहिए, कि इस कमरे की सज्जा अब खत्म हो गई है. यह कहते ही मानों वह कमरा निष्प्राण हो जाता है. हां, हम यह कह सकते हैं, कि हां अब इस कमरे का बुनियादी ढांचा, इस की हड्डियां, हम ने सही बिठा दी हैं.

छाया : हरदत्त मिश्र

ओबेरॉय होटल, भुवनेश्वर-यहां पहुंच कर लगता है, आप उड़ीसा में ही हैं!

हमें यह कभी नहीं कहना चाहिए, कि इस कमरे की सज्जा अब खत्म हो गई है. यह कहते ही मानो वह कमरा निष्प्राण हो जाता है. हां, हम यह कह सकते हैं, कि अब इस कमरे का बुनियादी ढांचा, इस की हड्डियां, हम ने सही बिठा दी हैं.

''कला को मैं बहुत आदर देती हूं. इसलिए हम एक बेहतरीन कलाकृति को कभी महज सजावटी उपकरण नहीं मानते. कई बार आप एक सुंदर कलाकृति उस के सौंदर्य से अभिभूत हो कर ले लेते हैं. बगैर यह सोचे कि इसे कहां रखेंगे. पर फिर आप पाएंगे, कि उस के लिए घर में कहीं न कहीं खुद ब खुद सही जगह निकल ही आती है. हमारे कई गाहक खुद अच्छे कला पारखी हैं. उन के घरों की सज्जा करते वक्त हम उन की रुचि के साथ अपनी रुचि का पूरा मिलान करके ही काम करते हैं. हमारा उन के साथ जो रिश्ता है, वह जब पूरी तरह एक दूसरे के प्रति आदर और आपसी भरोसे पर टिका होता है, तभी सब से उम्दा रिजल्ट प्राप्त होते हैं.

''घर को डिजाइन करते वक्त आप पहले उस के आकार में सही संतुलन और स्पेस की रचना करते हैं, फिर शेष चीजें अपने-आप स्थान पा जाती हैं.''

होटेल डिज़ायनिंग

''जाहिर है, यहां गृहस्वामी की शैली की निजी छाप जैसी कोई शर्त सामने नहीं होती, पर हमारा दृढ़ विश्वास है, कि सब से स्मरणीय उन्हीं होटलों के अंतःकरण होते हैं, जिस में उस जगह के स्थानीय गुण और उस देश की छवि दोनों का ही साफ अहसास मिलता है. हम ने हाल में भुवनेश्वर (उड़ीसा) में होटेल ओबरॉय की सज्जा की है, जिस का अभी उद्घाटन होना है. यहां होटेल की लॉबी से गुजरते हुए आप को पूरा अहसास होता है, कि आप उड़ीसा में ही हैं, देश के किसी और प्रांत में नहीं, हालांकि (स्थापत्यकार) सतीश ग्रोवर ने इस बिल्डिंग का डिजाइन पूरी तरह आधुनिक रखा है.

''इसी तरह मिस्र में भूमध्यसागर के किनारे हम ने अल-अरिश नामक होटेल पर मिस्र सरकार के लिए काम किया है. इस की भीतरी सज्जा पूरी तरह वहां की स्थानीय और राष्ट्रीय परंपरा का पुट लिए हुए है.

''हमारे काम का सब से सुंदर पहलू है, कि हर प्रोजेक्ट अपने आप में एक नया अनुभव होती है. हम ने बगदाद, कुवैत और युगांडा जैसे दूर दराज के मुल्कों में भी काम किया है. हर प्रोजेक्ट के दौरान स्थानीय संस्कृति पर खूब जम कर शोध किया. और जहां तक बन पड़ा, स्थानीय उपकरणों को ही इस्तेमाल किया.

''अपनी प्रोजेक्ट को संपूर्ण देखना, और अपने विचारों, अहसासों और अनुभवों का मूर्त रूप अपने सामने पाना हमारी सब से बड़ी खुशी का क्षण होता है.'' □